राज कॉमिक्स

मूल्य 15.00 संख्या 90

कर बुरा हो भला!

बांकेलाल

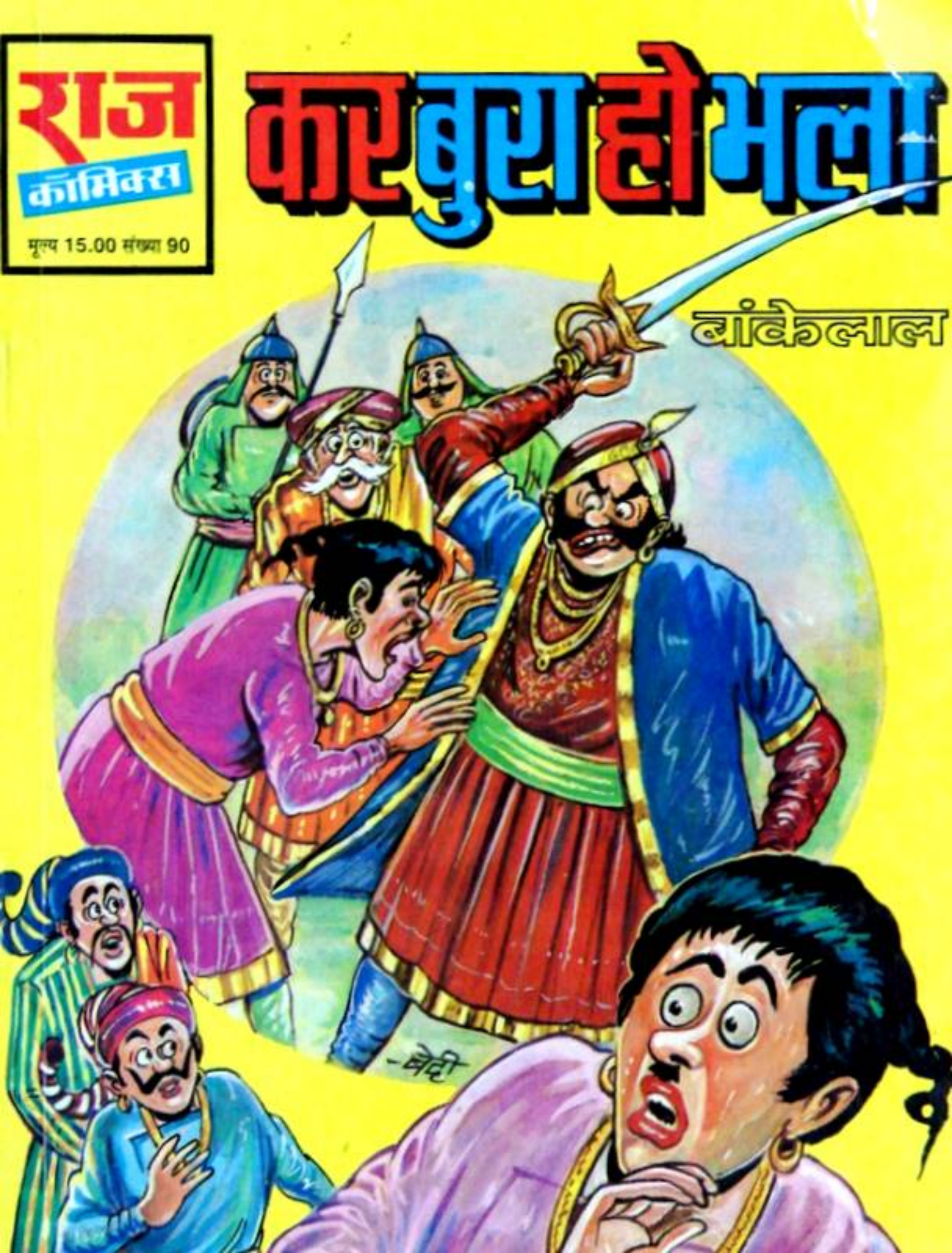

कर बुरा हो भला

चित्रांकन : बेदी
कहानी : धमिन्दर जुनेजा
संपादन : मनीष चंद्र गुप्त

प्रिय पाठको! पूर्व कथा 'बांकेलाल का कमाल' में आपने पढ़ा कि रामपुर गांव में ननकू और उसकी पत्नी गुलाबवती रहते थे। ननकू को जमींदार के खेतों पर काम करके जो रूखा-सूखा मिलता था, उससे ही गुजारा करता था। उसकी पत्नी गुलाबवती भगवान शिव की अनन्य भक्त थी शिव के आशीर्वाद से ही बांकेलाल का जन्म हुआ था, लेकिन उसकी एक शरारत से क्रोधित हो शिव ने उसे शाप दिया था कि तू हमेशा शरारतें करता रहेगा, लेकिन फिर गुलाबवती के गिड़गिड़ाने पर उन्होंने कहा—" मेरा शाप तो नहीं मिट सकेगा, लेकिन बांकेलाल जो शरारतें करेगा, उससे उसे अपयश की बजाए यश और धन प्राप्त होगा और इससे ही उसका जीवनयापन होगा। इसी तरह शरारतें करते और यश और धन कमाते हुए बांकेलाल जवान हो गया। एक बार उसकी शरारत के कारण गांव के लोग भयानक डाकू से बचे। जब विशालगढ़ के राजा विक्रमसिंह को बांकेलाल के कारनामों की खबर मिली तो उन्होंने अपने मंत्री धर्मसिंह को भेजकर बांकेलाल को बुलवाया, लेकिन महल में पहुंचते ही बांकेलाल के दिमाग में मंत्री के खिलाफ ही एक शरारत कुलबुलाने लगी। अब आगे पढ़ें—

क्या सोचने लगे बांकेलाल! यदि कोई बात मन में हो तो निःसंकोच कहो।
ऐ..हां...गुस्ताखी माफ हो महाराज। पर यह सच है कि मुझे यहां किसी कैदी की तरह लाया गया है।
क्या मतलब? तुम कहना क्या चाहते हो बांकेलाल?
महाराज, दरअसल आज मेरी तबीयत कुछ खराब थी - यही बात बार-बार मैं मंत्री धरमसिंह के सामने दोहराता रहा, पर मेरी बात सुने बगैर मुझे अपमानित कर मजबूरन यहां लाया गया।
क्या? ऐसा बुरा व्यवहार राज-अतिथि के साथ! ठीक है। हम धरमसिंह को उसकी गुस्ताखी की सजा कल भरे दरबार में देंगे।
दूसरे दिन राजदरबार में.
धरमसिंह, तुमने हमारी चेतावनी के बावजूद भी कल बांकेलाल को लाते समय उनके साथ दुर्व्यवहार किया।
क्षमा महाराज! मेरे कई बार आग्रह करने के बावजूद भी यह हमारे साथ आने को तैयार न थे। और बीमार होने का बहाना कर रहे थे। अतः विवश हो...

खामोश धरमसिंह! हम कुछ सुनना नहीं चाहते। तुमने न केवल राजआज्ञा का अपमान ही किया है बल्कि राजाज्ञा का उल्लंघन भी किया है।

इसकी सजा के तौर पर हम तुम्हें इसी समय मंत्री पद से हटाते हैं।
??
जा..जा... जो आज्ञा महाराज की!
क्या?

हूं, अब आया मजा। कम्बख्त, बांकेलाल से अकड़ता था। कह रहा था, दरबाजा तोड़ दूंगा। जल्दी से तैयार होकर हमारे साथ चलो, नहीं तो हम जबरन तुम्हें ले चलेंगे। बड़ा आया मंत्री कहीं का!

पर तभी उसका ध्यान राजा की तरफ गया जो उस समय बेहद चिंतित नजर आ रहे थे।
मुस्तफी माफ, महाराज! आप कुछ चिन्तित नजर आ रहे हैं।

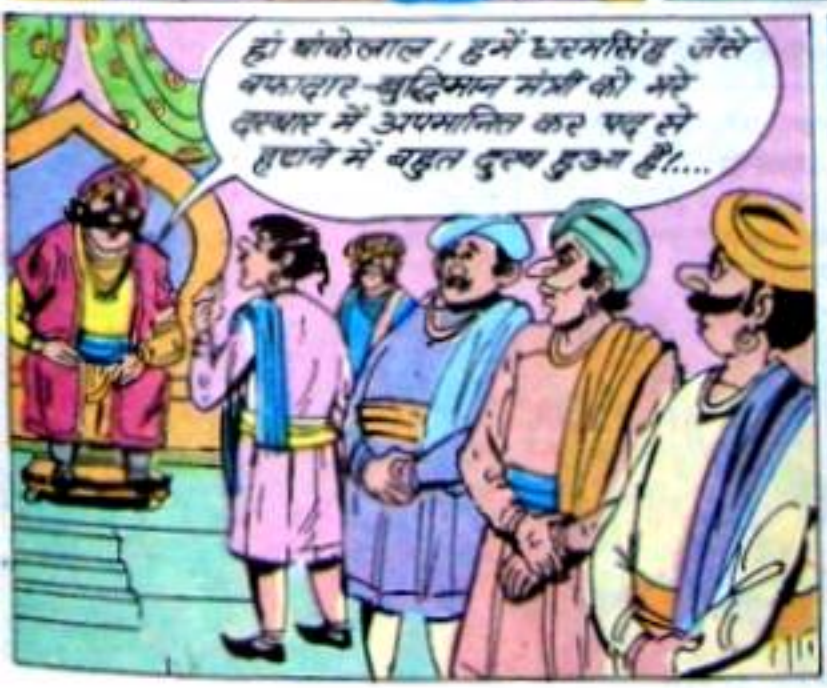
हां बांकेलाल! हमें धरमसिंह जैसे वफादार-बुद्धिमान मंत्री को भरे दरबार में अपमानित कर पद से हटाने में बहुत दुख हुआ है!....

....उफ! अब मैं इतनी जिम्मेदारी भरा पद किसे सौंपूं?! धरमसिंह तुमने हमारी चेतावनी के बाद भी क्यों ऐसी गलती की, जिसे हम चाहकर भी क्षमा नहीं कर सकते थे।

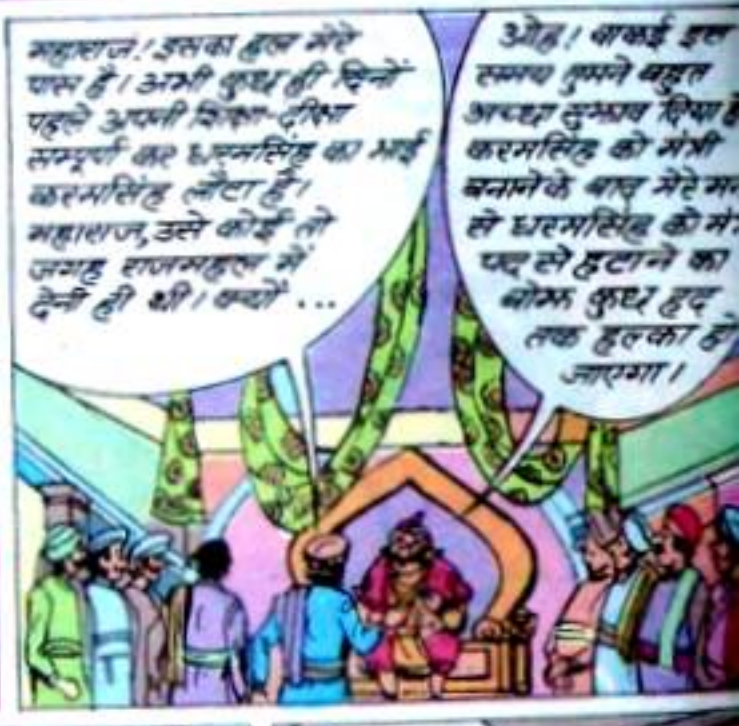

तभी विक्रमसिंह के राज्य का विशेष सलाहकार हँसमुख बोला—
महाराज की जय हो! आपको इस विषय में ज्यादा सोचकर परेशान नहीं होना चाहिए।
तुम नहीं जानते हँसमुख, यह अपने आप में एक बहुत ही गम्भीर मामला है। जाने मुझे क्यों ऐसा महसूस होता है कि मैंने धरमसिंह के साथ अन्याय किया है।
आपने कोई अन्याय नहीं किया महाराज! बल्कि आपने राजअतिथि के साथ बुरा बर्ताव करने वाले को उचित दण्ड देकर धर्म का पालन किया है।
पर अब मंत्री पद के लिए योग्य व्यक्ति की तलाश की जो समस्या है?
महाराज! इसका हल मेरे पास है। अभी कुछ ही दिनों पहले अपनी शिक्षा-दीक्षा सम्पूर्ण कर धरमसिंह का भाई करमसिंह लौटा है। महाराज, उसे कोई तो जगह राजमहल में देनी ही थी। क्यों...
ओह! वाकई इस समय तुमने बहुत अच्छा सुझाव दिया है। करमसिंह को मंत्री बनाने के बाद मेरे मन से धरमसिंह को मंत्री पद से हटाने का बोझ कुछ हद तक हल्का हो जाएगा।
थोड़ी देर बाद विशालगढ़ का नया मंत्री धरमसिंह का भाई करमसिंह था।
राजा विक्रमसिंह जिंदाबाद!
मंत्री करमसिंह जिंदाबाद!
बेटा बांके! अब तेरी खैर नहीं! क्योंकि अब धरमसिंह का भाई मंत्री है और वह अपने भाई की बेइज्जती का बदला तुमसे अवश्य लेगा।
हे भगवान! अब क्या करूं मैं?
और फिर...

... उसके दिमाग में एक नया विचार आया और ...

वाह-वाह! जय-जयकार हो महाराज की। महाराज की न्याय-प्रियता के विषय में जितना सुना था, उससे भी अधिक न्यायप्रिय पाया आपको। जय हो महाराज की!

क्या मतलब? बांकेलाल तुम कहना क्या चाहते हो?

???

मुस्तैदी माफ हो महाराज! दरअसल मैंने आपकी न्याय-प्रियता की काफी चर्चा सुनी थी और इसलिए मैंने यह झूठ बोला था कि मुझे लाते समय मंत्री ने मेरे साथ बुरा बर्ताव किया। मैं उसके न्याय के अंदाज को देखना चाहता था।

उफ! बांकेलाल, यह तुमने मेरी और मेरे न्याय की बहुत कठोर परीक्षा ली है...

तुम नहीं जानते, तुमने निर्दोष धरमसिंह पर अनजाने में ही सही, पर किया तो अत्याचार ही है।

त... तो क्या हुआ महाराज! आप उन्हें सिर से मंत्री का कार्यभार सौंप दें।

नहीं, यह सम्भव नहीं। क्योंकि अब हम मंत्री का पद उसके छोटे भाई को दे चुके हैं और अब अकारण ही हम उसे इस पद से नहीं हटा सकते।

वाह! क्या न्याय-प्रियता है!

ओह! अब धरमसिंह के साथ हम क्या न्याय करें?

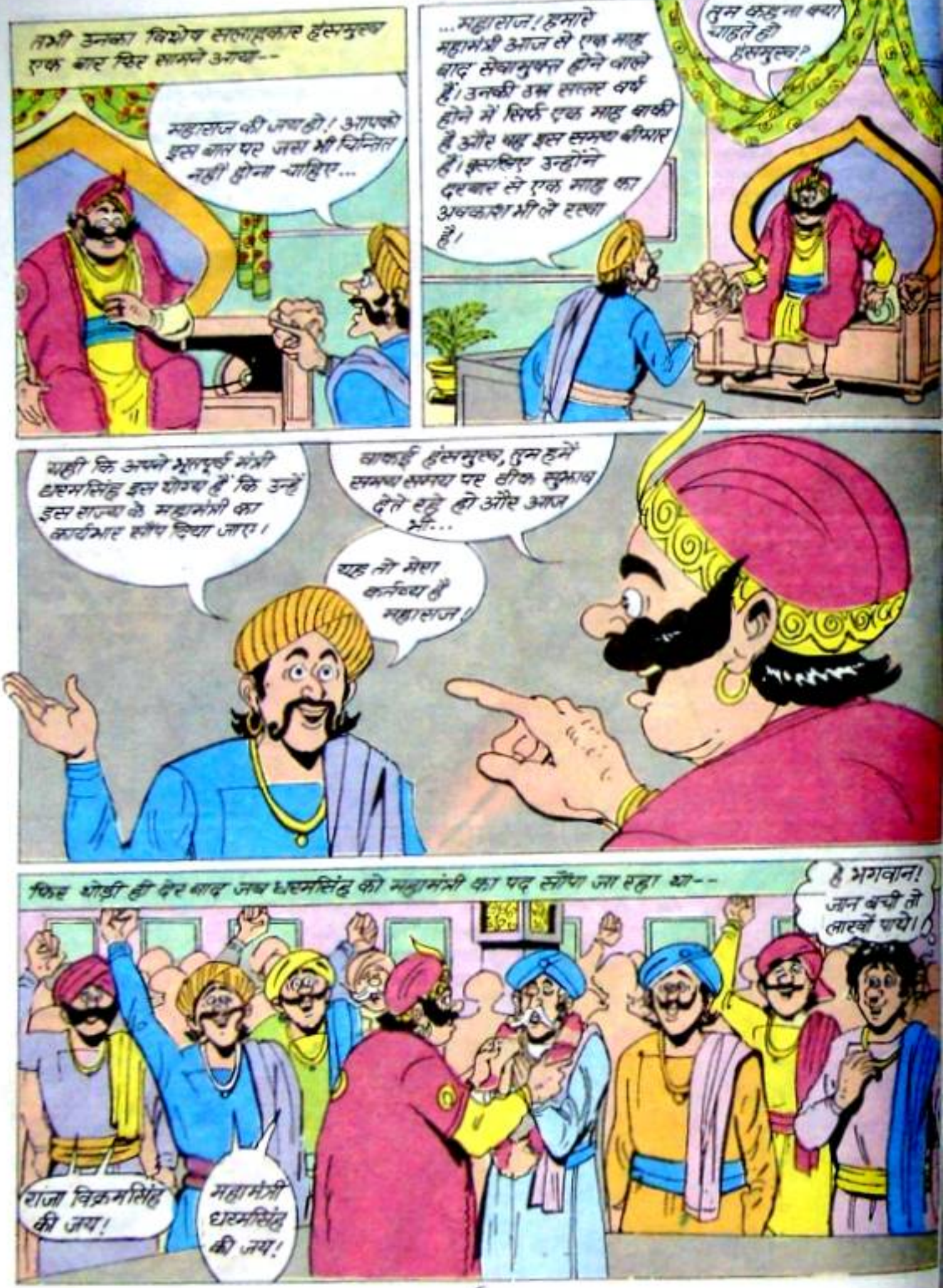

तभी उनका विशेष सलाहकार हंसमुख एक बार फिर सामने आया--
महाराज की जय हो! आपको इस बात पर जरा भी चिन्तित नहीं होना चाहिए...
...महाराज! हमारे महामंत्री आज से एक माह बाद सेवामुक्त होने वाले हैं। उनकी उम्र सत्तर वर्ष होने में सिर्फ एक माह बाकी है और वह इस समय बीमार हैं। इसलिए उन्होंने दरबार से एक माह का अवकाश भी ले रखा है!
तुम कहना क्या चाहते हो हंसमुख?
यही कि अपने भूतपूर्व मंत्री धरमसिंह इस योग्य हैं कि उन्हें इस राज्य के महामंत्री का कार्यभार सौंप दिया जाए।
वाकई हंसमुख, तुम हमें समय समय पर ठीक सुझाव देते रहे हो और आज भी...
यह तो मेरा कर्तव्य है महाराज!
फिर थोड़ी ही देर बाद जब धरमसिंह को महामंत्री का पद सौंपा जा रहा था--
हे भगवान! जान बची तो लाखों पाये!
राजा विक्रमसिंह की जय!
महामंत्री धरमसिंह की जय!

और उसी समय बांकेलाल जब विशालगढ़ राज्य की अतिथिशाला में अभी सोने की तैयारी कर ही रहा था कि तभी महामंत्री धर्मसिंह अपने भाई मंत्री कर्मसिंह के साथ वहां पहुंचा--
बांकेलाल जी, आप वाकई बहुत ही महान हैं जो...
ज..जी ऐसी कोई बात नहीं है...

खैर जाने दीजिए। किसी भी महान व्यक्ति को अपने मुंह पर अपनी तारीफ अच्छी नहीं लगती। पर आप हम दोनों भाइयों की तरफ से यह तुच्छ भेंट स्वीकार करें।

और बांकेलाल मन ही मन अपनी पीठ ठोक रहा था।
शाबास बांके! किस्मत हो तो तेरे जैसी!

फिर तभी से बांकेलाल विशालगढ़ के राजमहल में राज-अतिथि के रूप में शाही मौज-मस्ती छान रहा था।
वाह! क्या स्वादिष्ट भोजन है। और यह मिठाई आहा! मजा आ गया शाही पकवानों का।

किन्तु बांकेलाल अभी शाही पकवानों का पूरा स्वाद भी न ले पाया था कि वह एक दिन बुरी तरह बौखला गया। हुआ यों कि उस दिन महाराज विक्रमसिंह का दरबार लगा हुआ था और बांकेलाल राज-अतिथि के रूप में विशेष सिंहासन पर बैठा दरबार में चल रही कार्यवाही देख रहा था कि तभी दरबार में एक पहरेदार ने प्रवेश किया।
महाराज की जय हो!
कहो द्वारपाल, क्या कहना चाहते हो?
महाराज, उज्जयपुर के राजदूत पधारे हैं। वे अपने महाराज का आपके लिए संदेश लाए हैं।

राजा की आज्ञा पाकर द्वारपाल उदयपुर के राजदूत को सम्मानपूर्वक दरबार में ले आया।
आइये राजदूत जी! विराजिए! कहिए कैसे आना हुआ?
विशालगढ़ के महाराज की जय हो।
हमारे महाराज ने आपके लिए यह लिखित संदेश भेजा है।
हुक्म!
महामंत्री धरमसिंह ने दस्तावेज राजदूत के हाथ से लेकर महाराज की तरफ बढ़ाया।
महामंत्री जी, इसे आप ही मेरे दरबार में पढ़कर सुनाएं।
जो आज्ञा महाराज।
विशालगढ़ के राजा विक्रमसिंह को सूचित किया जाता है, हम यानि उदयपुर के राजा उदयसिंह आपको चेतावनी देते हैं कि आप स्वेच्छा से अपने राज्य को हमारे अधीन स्वीकार कर लें, इसी में आपकी भलाई है। अन्यथा आप युद्ध के लिए तैयार हो जाएं।

राजा विक्रमसिंह एक स्वाभिमानी राजा थे। अतः यह खबर सुनकर उनका खून खौलने लगा--
राजदूत! जाओ, और उदयसिंह से कहो कि हमसे युद्ध भूमि में मुलाकात करने के लिए तैयार रहें।
जो आज्ञा महाराज मैं चलता हूं।
इसी के साथ राजदूत दरबार से बाहर निकल गया...
...और उसके जाते ही--
सेनापति!
जी महाराज।
आप युद्ध की तैयारियां प्रारम्भ करें।
तभी महामंत्री चिन्तित स्वर बोला--
महाराज, उदयपुर के राजा उदयसिंह के पास हमारी सेना के मुकाबले दुगनी-तिगुनी सेना है।
हम जानते हैं महामंत्री! और सच पूछो तो हम जरा भी युद्ध के पक्ष में नहीं हैं...
पर हम किसी भी प्रकार अपने आत्मसम्मान और अपनी प्रजा के अहं पर चोट नहीं होने दे सकते। अतः यह युद्ध एक तरह से हमारी मजबूरी है।

बस यही कारण था कि बांकेलाल मन ही मन डर रहा था—
बेटा बांकेलाल! भाग ले यहां से, तेरी मौज-मस्ती के दिन अब खत्म हुए। और अब यहां बात युद्ध की चल रही है...
...और अपने राजा विक्रमसिंह की सेना भी विपक्ष के मुकाबले में आधी है। अतः बेटा भलाई इसी में है कि तू अब महाराज से विदा ले, और यहां से फूट ले।
और मन में आए इस विचार के साथ ही बांकेलाल, किसी गहरी सोच में डूबे महाराज से बोला—
अच्छा महाराज! अब मुझे इजाजत दें।
क्या मतलब बांकेलाल?
बस महाराज, मुझे काफी दिन हो गये घर से निकले। अब मैं घर वापस जाना चाहता हूं।
ओह! तुम्हारी इच्छा बांकेलाल! पर इतना जरूर कहूंगा कि यदि तुम भी इस युद्ध में हमारे साथ रहते तो...
...शायद तुम्हारी बुद्धि और सुझाव से हमारी सेना को कुछ लाभ पहुंचता...
व... वो महाराज! मैं रहता तो जरूर पर...

पर इससे पहले कि बांकेलाल अपनी बात पूरी करता या कोई नया बहाना बनाता, महामंत्री ने हस्तक्षेप किया।
चाहे जो भी हो बांकेलाल जी, इस समय तो आपको हमारे महाराज की बात मानकर अपने देश की, अपने राज्य की जनता का पूरा सहयोग करना चाहिए।
जी... जी ठीक है। जैसा आप लोग चाहेंगे वैसा ही होगा।
हाँ-हाँ, महामंत्री जी ठीक कहते हैं बांकेलाल जी!
और इसी के साथ दरबार में खुशी की लहर दौड़ गई।
बांकेलाल जी की जय हो!
महाराज विक्रमसिंह की जय हो!
हे! सारे जबरदस्ती मौत के मुंह में धकेल रहे हैं, बांकेलाल की जय कह कर!
फिर ठीक बारहवें दिन उदयपुर और विशालगढ़ की सेनाएं रणभूमि में क्रमशः पूरब और पश्चिम के छोरों में आ डटीं। तीसरे दिन युद्ध का बिगुल बजाना था।

☆ दस्त लगाने वाली एक औषधि

अपनी योजना का प्रथम चरण सफलता पूर्वक पूराकर बांकेलाल ने चैन की सांस ली--
हा..हा..हा..! अब आएगा मजा। ही... हा..हा..हा..
हा..हा..हा! अब जैसे ही सैनिक भोजन करेंगे तो... हो...हो...हो...हो...उन्हें दस्त के ऊपर दस्त...हा..हा..हा...
...फिर सारे सैनिक अपना-अपना पेट पकड़े लोटा हाथ में लिए जंगल की तरफ दौड़ेंगे। फिर जल्दी ही सैनिकों की हालत इतनी खराब हो जाएगी कि ये लोग युद्ध के काबिल नहीं रहेंगे...
...मैं चुपके से मौका देखकर यहां से खिसक जाऊंगा और उधमपुर के राजा उधमसिंह के खेमे में जाकर उन्हें यहां की सारी स्थिति समझा दूंगा...
...और तब उधमपुर की सेना शीघ्र ही आक्रमण कर देगी..और फिर आनन-फानन बिना किसी खास कठिनाई के उधमपुर की सेना विजय प्राप्त कर लेगी...
...और फिर उधमपुर के राजा मेरे इस कारनामे से प्रसन्न होकर मुझे ढेर सारा इनाम देंगे...हा...हा..हा...

...समझ क्या रखा था राजा विक्रमसिंह ने कि मुझे युद्ध के मैदान में न ले चलो। पर वे मुझे मरवाने के लिए यहाँ लाए थे। अब पता लगेगा कि झांकेलाल किस हस्ती का नाम है। ही... ही... ही...!
उधर झांकेलाल यानि समझदारराम मन ही मन कल्पना के महल बना रहा था और इधर मिन्न-भिन्न... से नियुक्त हो सैनिकों की पहली टुकड़ी भोजन करने लगी—
और जैसे ही सैनिक भोजन करके उठे, भोजन में मिले जमालघोटे ने अपना असर दिखाया—
आह!
हाय!
आई!
उफ़! यह अचानक पेट में दर्द क्यों होने लगा?
और अगले ही क्षण भोजन कर चुके सारे सैनिक हाथों में लोटे लिए जंगल की तरफ भागे—
और जब सैनिकों की दूसरी टुकड़ी ने भी भोजन किया तो उनका भी यही हाल हुआ।
उफ़!
हा!
आई!
आह!

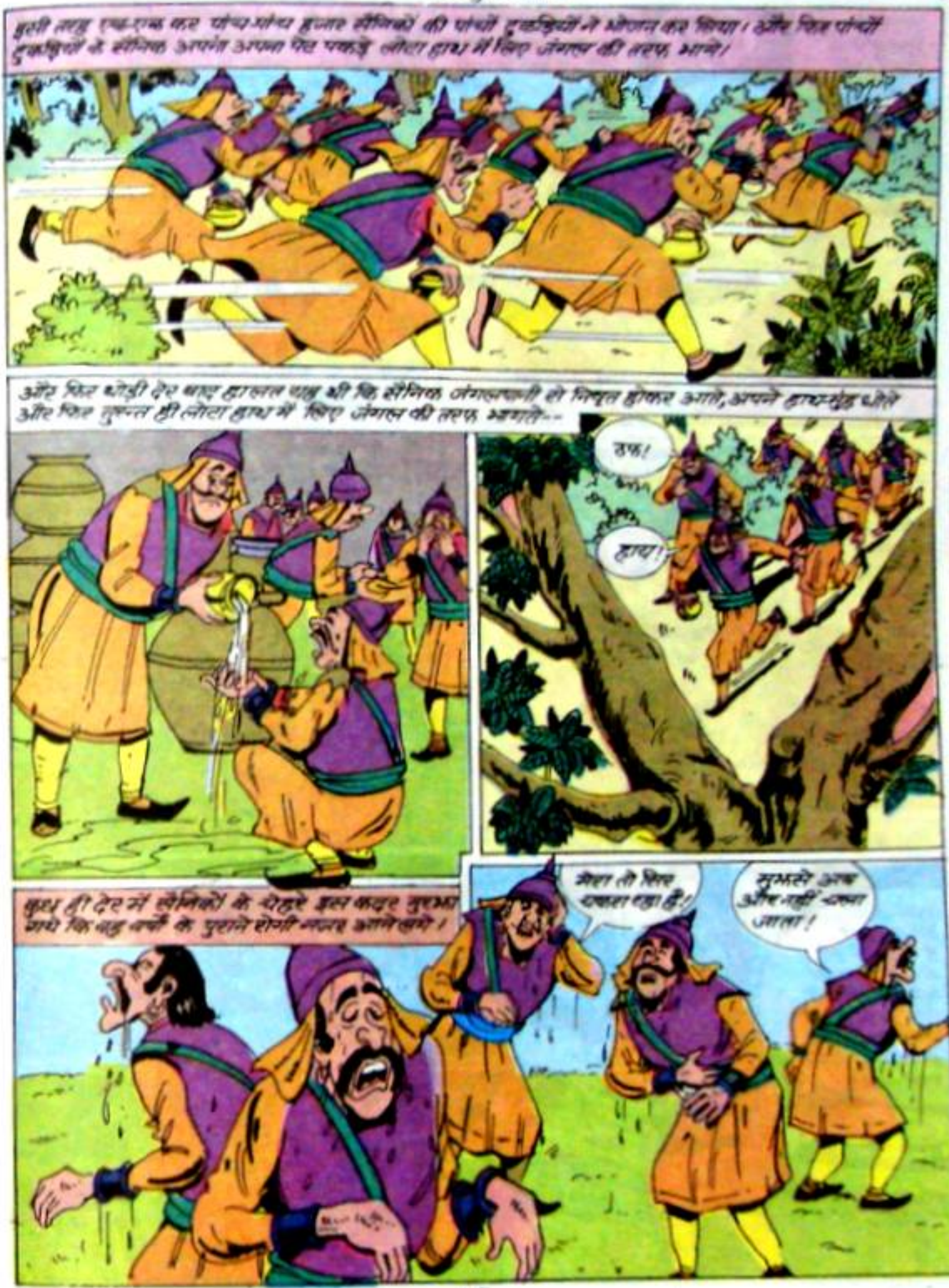

इसी तरह एक-एक कर पाँच-पाँच हजार सैनिकों की पाँचों टुकड़ियों ने भोजन कर लिया। और फिर पाँचों टुकड़ियों के सैनिक अपना-अपना पेट पकड़े लोटा हाथ में लिए जंगल की तरफ भागे।
और फिर थोड़ी देर बाद हालत यह थी कि सैनिक जंगलपानी से निवृत होकर आते, अपने हाथ-मुँह धोते और फिर तुरन्त ही लोटा हाथ में लिए जंगल की तरफ भागते...
उफ!
हाय!
कुछ ही देर में सैनिकों के चेहरे इस कदर मुरझा गये कि वह बरसों के पुराने रोगी नजर आने लगे।
मेरा तो सिर चकरा रहा है!
मुझसे अब और नहीं चला जाता!

महाराज विक्रमसिंह के खेमे में...

महाराज की जय हो।

कहो जवान तुम क्या कहना चाहते हो?

महाराज, हमारी सारी सेना को एकाएक हैजे की भयंकर बीमारी लग चुकी है। सब बुरी तरह परेशान हैं।

क्या? य... यह तुम क्या कह रहे हो जवान?

महाराज, मैं ठीक कह...आ ...हूं।

और अपनी बात पूरी करने से पहले ही सैनिक अपना पेट पकड़कर बाहर की तरफ भागा।

और इस सूचना के साथ ही राजा विक्रमसिंह के छक्के छूट गये।

ओह! हे ईश्वर यह तूने मुझे किस धर्म संकट में डाल दिया ... मैं क्या करूं भगवान?

उफ्! अब क्या होगा! पराजय तो पहले ही निश्चित थी, पर इस तरह निश्चित भी पराजय... हे भगवान!

फिर कुछ सोचकर महाराज ने महामंत्री को बुलवाया।

महामंत्री जी, हमें पता लगा है कि हमारी पूरी सेना में हैजे की भयानक बीमारी फैल चुकी है। अब आप अभी जाकर इस बीमारी का कारण पता लगाएं।

जो आज्ञा महाराज!

बीमारी का कारण जानने के लिए महामंत्री सैनिकों के डेरे में पहुंच और पूछताछ करने लगा। जल्दी ही इस पूछताछ का नतीजा सामने आया और वह सैनिक जिसने बांकेलाल को भोजन में कुछ मिलाते देखा था, वह डरता हुआ सामने आया।
ज..ज..ज..जी हुजूर वह.. वह..
ज..जी हुजूर, मैंने सुबह भंडारे में बांकेलाल जी को भोजन में कुछ मिलाते देखा था।
क्या बात है? जवान, डरो नहीं जो कहना है साफ साफ कहो।
क्या?

तुम बकते हो जवान! भला बांकेलाल जी भोजन में क्यों कुछ मिलाने लगे?
क्षमा करें हुजूर! मैं सच कहता हूं।

ओह! भला यह सैनिक क्यों झूठ बोलने लगा? मेरी तो समझ में नहीं आता मैं क्या करूं? मुझे तो सिर्फ इस बात की खबर महाराज को कर देनी चाहिए।

तुरन्त ही महामंत्री ने यह बात महाराज को बताई और पूरी बात सुनने के बाद--
यह आप क्या कह रहे हैं महामंत्री जी? नहीं, यह नहीं हो सकता।
पर महाराज, उस सैनिक ने खुद बांकेलाल को तैयार हो रहे भोजन में कुछ मिलाते देखा है।

समझ नहीं आता भला बांकेलाल भोजन में क्या गड़बड़ी कर सकता है? और उसे इससे क्या लाभ?

महाराज ! मेरे ख्याल से तो पहले राजवैद्य से भोजन का परीक्षण करवाया जाए, ताकि आगे सही निर्णय लिया जा सके।
जैसा चाहो, वैसा करो महामंत्री जी ! हमारी तो कुछ समझ में नहीं आता, आखिर हो क्या रहा है?
महामंत्री ने वहीं राजवैद्य को बुलवाया और साथ ही भण्डारे से थोड़ा सा भोजन भी।
वैद्यजी ! आप इस भोजन का परीक्षण करके बताएं कि इसमें कुछ मिला हुआ तो नहीं...
अभी लीजिए हुजूर !
फिर वैद्यजी वह भोजन लेकर अपने खेमे में आए और तरह-तरह से उसका परीक्षण करने लगे।
और राजवैद्य ने जल्द ही भोजन में मिले जमालघोटे का रहस्य जान लिया।
ओह! भोजन में तो जमालघोटा मिलाया गया है ! मुझे तुरन्त ही इस बात की सूचना महाराज को देनी चाहिए !
फिर—
हुजूर ! इस भोजन में जमालघोटा बहुत अधिक मात्रा में मिलाया गया है!
क्या ?
!!!

ओह! नीच-कमीने बांकेलाल, हम तुझे ऐसी सजा देंगे कि...
महामंत्री जी! फौलन बांकेलाल को बंदी बनाकर हमारे सामने पेश किया जाए।
जो आज्ञा महाराज की!
और इधर बांकेलाल भागने की तैयारी में था।
अब मेरा यहां का काम पूरा हुआ। मुझे अब यहां से भाग निकलना चाहिए... और फिर यहां की पूरी स्थिति की जानकारी उधमपुर के राजा को देनी चाहिए।
पर अभी बांकेलाल भागने की तैयारी कर ही रहा था कि-
खबरदार बांकेलाल! भागने की कोशिश मत करना। सैनिको, पकड़ लो इसे।
क...क्या? प...पर क्यों?

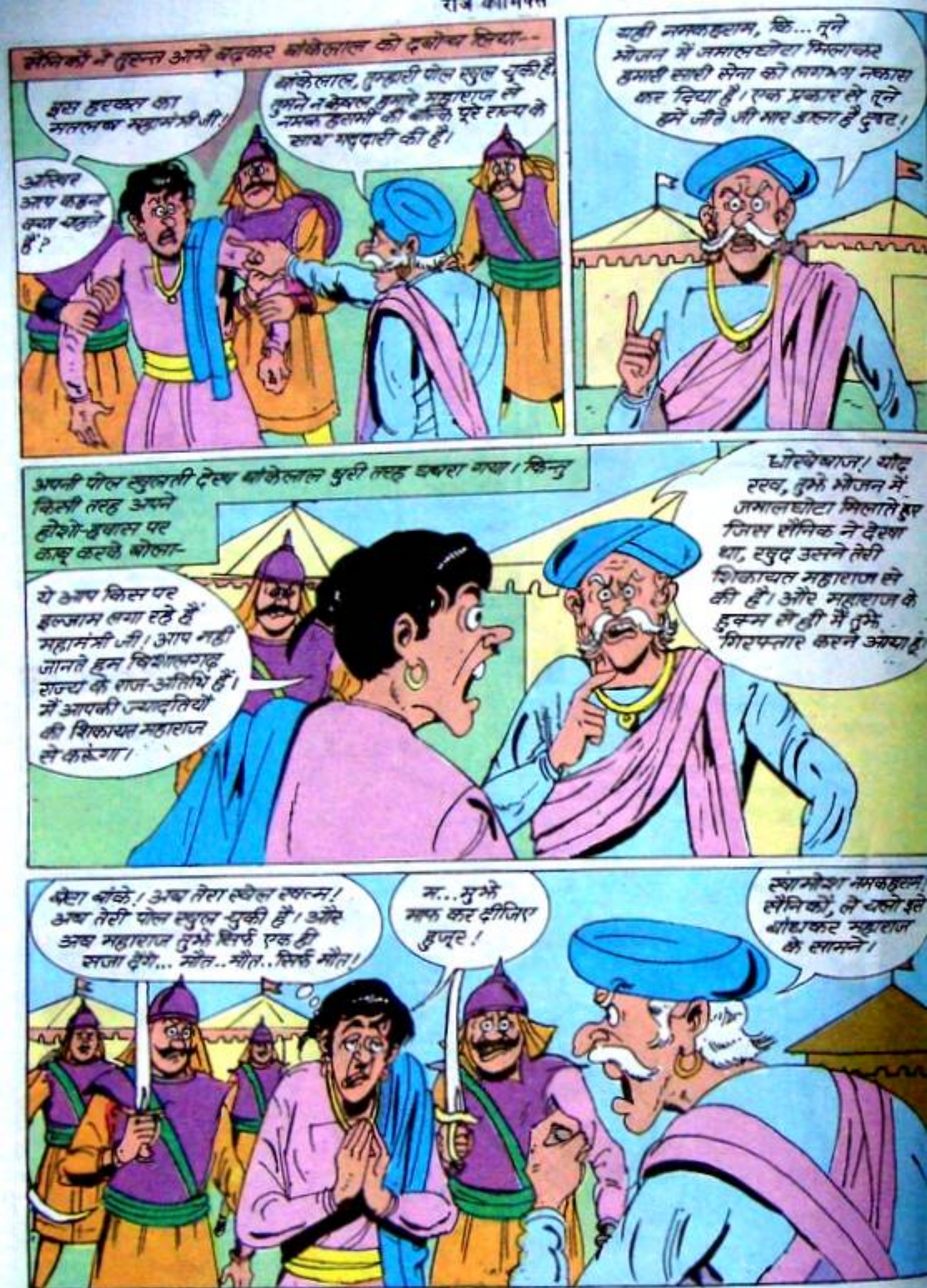

सैनिकों ने तुरन्त आगे बढ़कर बांकेलाल को दबोच लिया--
इस हरकत का मतलब महामंत्री जी!
बांकेलाल, तुम्हारी पोल खुल चुकी है! तुमने न केवल हमारे महाराज से नमक हरामी की बल्कि पूरे राज्य के साथ गद्दारी की है।
आखिर आप कहना क्या चाहते हैं?
यही नमकहराम, छि... तूने भोजन में जमालघोटा मिलाकर हमारी सारी सेना को लगभग नकारा कर दिया है। एक प्रकार से तूने हमें जीते जी मार डाला है दुष्ट!
अपनी पोल खुलती देख बांकेलाल बुरी तरह घबरा गया। किन्तु किसी तरह अपने होशो-हवास पर काबू करके बोला-
ये आप किस पर इल्जाम लगा रहे हैं महामंत्री जी! आप नहीं जानते हम विशालगढ़ राज्य के राज-अतिथि हैं। मैं आपकी ज्यादतियों की शिकायत महाराज से करूंगा।
धोखेबाज! याद रख, तुझे भोजन में जमालघोटा मिलाते हुए जिस सैनिक ने देखा था, खुद उसने तेरी शिकायत महाराज से की है। और महाराज के हुक्म से ही मैं तुझे गिरफ्तार करने आया हूं।
बेटा बांके! अब तेरा खेल खत्म! अब तेरी पोल खुल चुकी है। और अब महाराज तुझे सिर्फ एक ही सजा देंगे... मौत..मौत..सिर्फ मौत!
म...मुझे माफ कर दीजिए हुजूर!
खामोश नमकहराम! सैनिकों, ले चलो इसे बांधकर महाराज के सामने।

महामंत्री ने बांकेलाल को महाराज के सामने पेश किया-

बोल दुष्ट! क्यों की तूने ऐसी नीच हरकत? बता, बोल दुष्ट...बोल...

ओ... वो माफी... रहम महाराज... रहम...!

स्वामीद्रोह नीच! तूने हमारे साथ ही नहीं, बल्कि अपने देश, अपने साथियों के साथ गद्दारी की है। हम तुझे कभी माफ नहीं कर सकते।

महाराज, मुझे...

चुप हो जा मक्कार!

महामंत्री जी! आप इसे फौरन मेरी आंखों के सामने से हटा दीजिए। कल युद्ध प्रारम्भ होने से पहले हम खुद अपने हाथों से इसका गला काटेंगे। यही इसकी सजा है।

रहम...महाराज... रहम!

सैनिको! ले जाओ इसे!

न... नहीं!

फिर सैनिक बांकेलाल को घसीटते हुए वहां से ले गये।

इधर उदयपुर के राजा उदयसिंह के खेमे में उदयपुर के बुद्धिमान जासूस पोपटलाल और चौपटलाल अपने राजा उदयसिंह के सामने सिर झुकाए खड़े थे।

इसमें कोई शक नहीं कि आप दोनों विलक्षण सूझ-बूझ वाले हैं या यह कहा जाए कि आप दोनों हमारी सेना की रीढ़ हैं तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी।

महाराज! यह तो आपका बड़प्पन है, वरना हम किस काबिल हैं।

यह आप दोनों द्वारा लाई गई दुश्मन सेना की गुप्त जानकारी ही है। जिसकी बदौलत हमने कई देशों में बड़ी सरलता से विजय प्राप्त की है और आज भी हम चाहते हैं कि आप दोनों फौरन यहां से जाकर किसी प्रकार विशालगढ़...
...की सेना का जायजा लें और शाम तक अपनी जानकारी हमारे सामने पेश करें।
आज्ञा का पालन होगा अन्नदाता!
फिर जासूस पोपट लाल, चौपट लाल अपने राजा की आज्ञानुसार चल पड़े विशालगढ़ की सेना की स्थिति का जायजा लेने।
और कुछ दूर आगे चलने के बाद–
भाई, पोपट, वो देखो! सामने विशालगढ़ के सैनिक!
हां भई चौपट वो तो इधर ही आ रहे हैं। क्या हम दोनों उनकी नजर में आ गये हैं?
नहीं पोपट! वे शायद नित्यकर्मों से निपटने जंगल जा रहे हैं। देख नहीं रहे उनके हाथों में लोटे हैं।
हां भई चौपट! तुम ठीक कहते हो और सुनो, मेरे दिमाग में जासूसी की एक सरल और नयी युक्ति आयी है।
क्या?
क्यों न हम दोनों यहीं किसी पेड़ पर चढ़कर आराम से बैठें?
पोपट भाई! हम यहां दुश्मन देश की सेना की स्थिति का जायजा लेने आये हैं, न कि पेड़ पर चढ़कर आराम करने!
चौपट भाई, बात को समझने का प्रयत्न करो। देखो, दुश्मन देश का प्रत्येक सैनिक नित्यकर्म से निबटने इधर से होकर ही जंगल जायेगा। और हम...

यहीं पेड़ पर चढ़े अनुमान लगा लेंगे कि दुश्मन देश के सैनिकों की संख्या कितनी है?
मान गया भई चोपट! तेरे दिमाग को! क्या धांसू तरकीब आई है तेरे भेजे में!
फिर देर किस बात की प्यारे! चढ़ लो, उस बरगद के पेड़ पर।
ठीक है चलो!
फिर दोनों जासूस सामने खड़े विशाल बरगद के पेड़ पर चढ़ गये...
और सामने से जंगल-पानी के लिए जा रहे विशालगढ़ के सैनिकों की गिनती करने लगे।
और फिर कुछ ही देर बाद--
चौपट, तुम्हारे अनुमान से अब तक कितने सैनिक निवृत होकर वापस जा चुके होंगे?
यही करीब पचास-पचपन हजार सैनिक!
और हमारा अनुमान क्या था?
यही कोई चालीस-पैंतालीस हजार सैनिक!...प...पर यह तो पचास-पचपन... तुम कहना क्या चाहते हो?
यही कि हमारी पुरानी जानकारी कितनी गलत थी। और सुनो, सैनिक अभी भी आते ही जा रहे हैं।
यानि कि हम अभी तक बहुत बड़ी गलतफहमी में थे।
यह वही समय था, जब विशालगढ़ के सैनिकों को दस्त की भयंकर बीमारी लगी हुई थी। और वह बार-बार लोटा हाथ में उठाए जंगल की ओर भाग रहे थे और पेड़ पर चढ़े चौपट-चोपट उन्हें नया सैनिक समझकर दुश्मन देश की सेना की संख्या के बारे में गलतफहमी में पड़ गये थे।...

...सैनिक निरन्तर आते-जाते रहे। और यह देख जासूस चौपट लाल और चौपट लाल के चेहरे पर पसीना चमकने लगा।
भई चौपट! विशालगढ़ के महाराज के पास इतनी बड़ी सेना? ताज्जुब है!
इसमें ताज्जुब की क्या बात भाई चौपट! पड़ोसी देश के राजाओं ने गुप्त मदद की होगी राजा विक्रम सिंह की।
तुम शायद ठीक कहते हो।
तुम्हारे ख्याल से अब तक कितने सैनिक नित्यकर्म से निवृत होकर जा चुके हैं?
लगभग दो लाख!
और हमारे महाराज अपनी सत्तर हजार की सेना को विशालगढ़ की सेना के मुकाबले दुगना समझ रहे हैं।
चौपट भाई! तुम कहना क्या चाहते हो?
यही कि हमारे महाराज को इस गलतफहमी में बहुत बड़ी पराजय का मुंह देखना पड़ेगा।
तो चौपट भाई, हमें क्या? हमारे महाराज हारें या जीतें... अरे भई हम जासूस हैं। हमारा काम है, दुश्मन देश की सैनिक जानकारी प्राप्त करना और प्राप्त जानकारी अपने राजा के सामने पेश करना।

तुम शायद ठीक कहते हो भाई चोपट...आओ, हम यह गर्मा-गर्म खबर फौरन अपने महाराज को दें।
चल भाई चौपट!
फिर थोड़ी ही देर बाद चोपट-चौपट अपने महाराज अमरसिंह के सामने थे।
अन्नदाता, गुस्ताखी माफ!
अन्नदाता, विशालगढ़ की सेना अपनी सेना के मुकाबले तिगुनी-चौगुनी है!
ये तुम क्या कह रहे हो चोपट?
अन्नदाता, चौपट ठीक कह रहा है। हम लोगों ने अपनी आँखों से विशालगढ़ की विशाल सेना देखी है।
क्या?
जी हाँ अन्नदाता! अब आप ही उस देश की सेना की संख्या का अंदाजा लगाएं, जिस देश के सैनिक एक बार में हजारों की संख्या में नित्यकर्म से निबटने के लिए जंगल जाते हैं और उनके वापस आते ही दूसरी...
...टोली आती है। और यही क्रम सुबह से लेकर दोपहर तक चलता है। पर सैनिक फिर भी आते-जाते रहते हैं।
ओह! पर हमारी जानकारी में तो विशालगढ़ की सेना इतनी बड़ी न थी।

यह बात तो अपनी जगह सही है अन्नदाता! पर हमारा अनुमान है कि पड़ोस के कई राज्यों ने मिलकर राजा विक्रमसिंह की मदद की है।
यह तो हो सकता है। पर अब हम क्या करें? कल युद्ध में हमारी पराजय तो हमारी नाक कटवा देगी।
अन्नदाता! हमें विशालगढ़ के महाराजा विक्रमसिंह से अपनी पराजय स्वीकार कर सन्धि का रास्ता अपनाना चाहिए।
हाँ यही ठीक रहेगा! वाकई तुम दोनों जासूसों ने समय-समय पर हमें ठीक सुझाव देकर हमारी नाक इतनी ऊंची कर दी है।
अन्नदाता! यह तो हमारा फर्ज है।
अब तुम दोनों बिना विलम्ब किये राजदूत डूंगरसिंह के साथ विशालगढ़ के महाराज के पास चले जाओ। मैं तुम्हें सन्धिपत्र लिखे देता हूँ।
ठीक है अन्नदाता!
फिर उदयपुर के दोनों जासूस और राजदूत, सीधे जा पहुँचे विशालगढ़ के महाराज से मिलने।

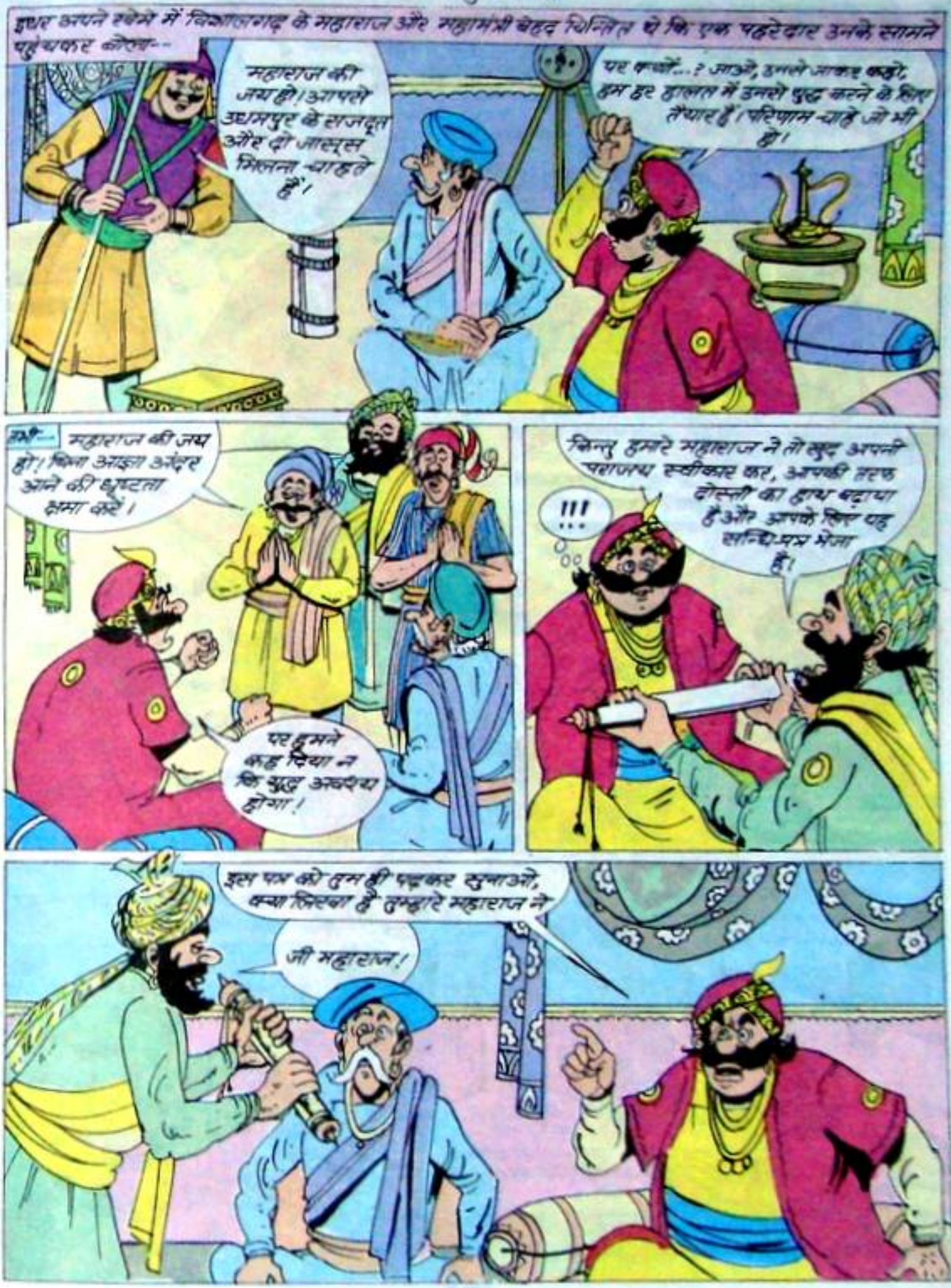
इधर अपने खेमे में विजयगढ़ के महाराज और महामंत्री बेहद चिंतित थे कि एक पहरेदार उनके सामने पहुंचकर बोला--
महाराज की जय हो! आपसे उदयपुर के राजदूत और दो जासूस मिलना चाहते हैं।
पर क्यों...? आओ, उनसे जाकर कहो, हम हर हालत में उनसे युद्ध करने के लिए तैयार हैं। परिणाम चाहे जो भी हो।
महाराज की जय हो! बिना आज्ञा अंदर आने की धृष्टता क्षमा करें।
पर हमने कह दिया न कि युद्ध अवश्य होगा!
किन्तु हमारे महाराज ने तो खुद अपनी पराजय स्वीकार कर, आपकी तरफ दोस्ती का हाथ बढ़ाया है और आपके लिए यह सन्धि-पत्र भेजा है।
!!!
इस पत्र को तुम ही पढ़कर सुनाओ, क्या लिखा है तुम्हारे महाराज ने
जी महाराज!

फिर पोपट और चौपट राजा चित्रसिंह को बताते चले गये कि किस तरह उन्होंने बार-बार लोटा हाथ में...

पूरी बात सुनने के बाद राजा विक्रमसिंह गहरे सोच में पड़ गये।
फिर बोले–
अपने महाराज से आप लोग कहें कि, हमें उनकी मित्रता स्वीकार है।
महाराज विक्रमसिंह की जय हो।
इसी के साथ वे तीनों खेमे से बाहर निकल गये।
और उनके जाते ही--
तो महामंत्री जी, इसका मतलब बांकेलाल ने हमारी इज्जत बचाने के लिए जान-बूझकर भोजन में जमालघोटा मिलाया था।
जी महाराज! लगता है भोजन में जमालघोटा मिलाना बांकेलाल की पूर्व नियोजित योजना थी।
वह क्या शानदार बुद्धिमत्ता-पूर्ण योजना थी बांकेलाल की!
हां महाराज! और अनजाने में हमने कितना बुरा सलूक किया बांकेलाल के साथ! वह तो बेचारा बारबार अपनी सफाई में कुछ कहना चाहता था, पर हमने उसे कुछ कहने का अवसर नहीं दिया।
महामंत्री! हमें तुरन्त उससे माफी मांगनी चाहिए।
इसी के साथ महाराज व महामंत्री बांकेलाल से मिलने चल पड़े।

और उधर कैद में पड़े बांकेलाल का बुरा हाल था।
हे ईश्वर! अब क्या होगा! अब तो मेरी मौत निश्चित है! प..पर मैं... मैं मरना नहीं चाहता, मुझे बचा ले भगवान, हे प्रभु!
तभी बांकेलाल की खुली आंखों के सामने एक भयानक स्वप्न घूम गया।
महाराज! मार डालो इस दुष्ट पापी को!
क्ष...क्षमा महा..राज! क्षमा... मुझे...
दुष्ट! देश के दुश्मन को हम कभी क्षमा नहीं कर सकते।
इसी के साथ राजा विक्रमसिंह का हाथ लहराया और...
न.. न... हीं!
और उसकी चीख सुनकर महाराज, जो बांकेलाल के पास ही आ रहे थे, दौड़ते हुए वहां पहुंचे--
बांकेलाल, क्या... क्या हुआ? तुम चीख क्यों रहे थे?
ऐ हां... महाराज मुझे मत मारो, मुझे क्षमा कर दो।

और फिर आँसू बहाता हुआ बांकेलाल महाराज के पैरों में गिर पड़ा।
प्राणदान महाराज! क्षमा महाराज मैं...
अरे! यह क्या करते हो बांकेलाल! माफी तो हम खुद तुमसे माँगने आए हैं।
महाराज की बात सुनते ही बांकेलाल के दिमाग को एक झटका सा लगा।
बांके बेटा! तू कुछ मत बोल। बस, चुपचाप इनकी सुनता रह और देख आगे-आगे होता है क्या?
हाँ बांकेलाल! तुम्हारी ही दूरदर्शिता व चतुराई से हम पर आई मुसीबत टली है... और हमें नहीं मालूम था कि भोजन में जमालघोटा मिलाना तुम्हारी बुद्धिमत्तापूर्ण योजना का अंग है।
क्या?
और बांकेलाल जी, हमने आप पर गलत संदेह कर आपसे बहुत बुरा व्यवहार किया। हमें क्षमा कर दीजिए।
विशालगढ़ की सेना को जब बांकेलाल की यह योजना बताई गई तो सभी बांकेलाल की जय-जयकार कर उठे।
क्या सोचने लगे बांकेलाल? क्या आपने अभी तक हमें क्षमा नहीं किया?
ए.. हाँ... जी, महाराज, कृपया आप मुझे शर्मिंदा न करें।
हा.. हा.. हा. वाकई क्या चाल सोची थी बांकेलाल जी ने।
हा..हा..हा.. बांकेलाल जी ने हमारे पेट को थोड़ी तकलीफ देकर, हमारे प्राण और इज्जत दोनों की रक्षा की है।
बांकेलाल जी की!
जय!

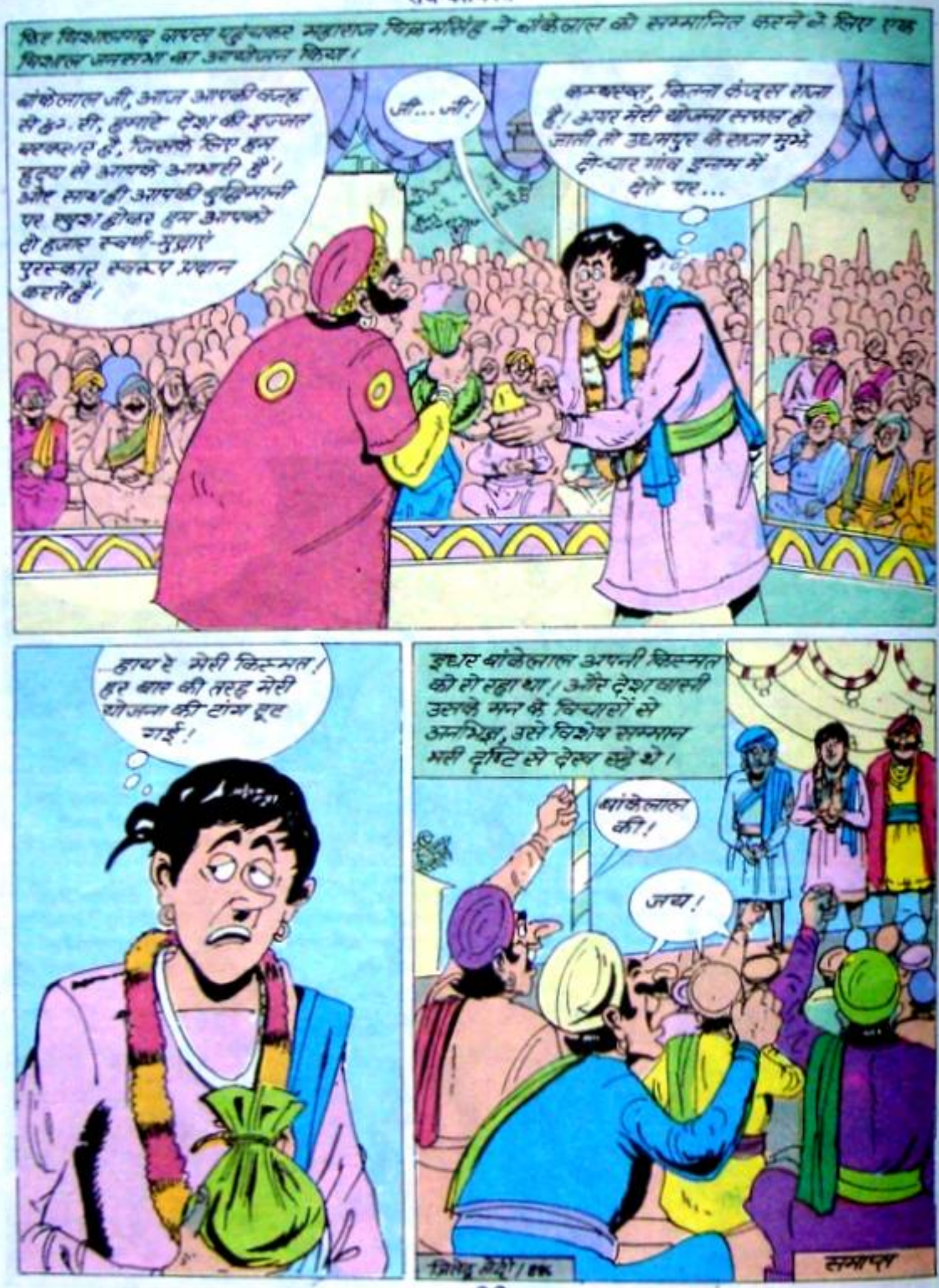

फिर विशालगढ़ वापस पहुंचकर महाराज विक्रमसिंह ने बांकेलाल को सम्मानित करने के लिए एक विशाल जनसभा का आयोजन किया।
बांकेलाल जी, आज आपकी वजह से ही, हमारे देश की इज्जत बरकरार है, जिसके लिए हम हृदय से आपके आभारी हैं! और साथ ही आपकी बुद्धिमानी पर खुश होकर हम आपको दो हजार स्वर्ण-मुद्राएं पुरस्कार स्वरूप प्रदान करते हैं।
जी... जी!
कम्बख्त, कितना कंजूस राजा है! अगर मेरी योजना सफल हो जाती तो उदयपुर का राजा मुझे दो-चार गांव इनाम में देते पर...
...हाय रे मेरी किस्मत! हर बार की तरह मेरी योजना की टांग टूट गई!
इधर बांकेलाल अपनी किस्मत को रो रहा था। और देशवासी उसके मन के विचारों से अनभिज्ञ, उसे विशेष सम्मान भरी दृष्टि से देख रहे थे।
बांकेलाल की!
जय!
जितेन्द्र बेदी /
समाप्त